न्युमोनिया फेफडोंका विकार

फेफडों का विकार का अर्थ

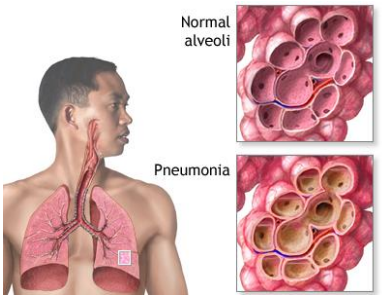

जीवाणू, विषाणू अथवा विकार से फेफडोंमे रोग स्थापित होता है ।ऐसी किसी रोगी के संपर्क मे आने से यह रोग फैलता है। शस्त्रक्रिया हो जाने पर अथवा कृत्रिम श्वासोच्छवास के कारण न्युमोनिया हो सकता है । अन्न का छोटा टुकडा अथवा मुखरस फेफडोंमे चले जाने से यह रोग होता है । फेफडोंका विकार यह रोग तीव्र एवं प्राणघातक भी हो सकता है ।

कारण:-

- सर्दी या बुखार
- फेफडों अथवा हृदय का विकार
- एचआयव्ही, कॅन्सर अथवा स्टेरॉइडस के अत्याधिक उपयोग से प्रतिकारात्मक शक्ती मे कमी
- दवाखाने मे भरती
- धुम्रपान
- अत्याधिक मद्यप्राशन
- बढती उम्र

लक्षण:-

- ठंड लगना, बुखार
- खाँसी, कफ
- श्वास मे कमी धडकन बढना
- खाँसी से छाती मे दर्द होना
- सिरदर्द
- उल्टी होना
- थकावट अथवा गुमसुम

निदान पध्दती:-

- नाडी की गती एवं रक्त ऑक्सीजन की जाँच
- रक्त एवं पिशाब की जाँच कर फेफडों का रोग निर्माण निर्माण होने वाले जीवाणुओंकी जाँच रक्त जाँच मे रक्त मे ऑक्सीजन प्राणवायू का प्रमाण जाँचा जाता है ।
- फेफडोंका रोग छाती का एक्स रे (क्ष किरण) अथवा सिटी स्कॅन के माध्यम से भी जाना जा सकता है।
- म्युकस के टुकडे का जाँच की जाती है कि किस जंतु के कारण यह रोग हुआ है, जिस का कारण उचित दवा का चयन किया किया जाता है।

इलाज:-

- जीवाणूओंका संसर्ग रुके तब तक दवाऐं दी जाती है वैसे ही दर्द एवं बुखार के लिए एसीटोमायनोफेन इी जा सकती है यह दवा उचित पध्दती से न लेने पर यकृत पर परिणाम हो सकता है ।
  - श्वासमार्ग से गाढा पदार्थ हटाकर श्वासोच्छवास निरंतर हो सके तद्हेतु उचित व्यायाम कराया जाता है। तद्हेतु किसी चिकित्सकीय उपकरण का उपयोग किया जाता है, जिससे लक्षण कम होने दिखाई देते है।

रुग्णसमुपदेशन:-

- रोग जिवाणू फैले नही इसपर ध्यान दे ।
- साबुन एवं पानी से बारबार हाथ धोए।
- साबुन एवं पानी के अभाव मे हाथ स्वच्छ करने हेतु जेल (Gel) का उपयोग करे ।
- हाथ धोए बिना आँख मुख को न छुए।
- खाँसी होने पर मुख पर दस्ती

Reference: Micromedex乙s Care Notes System Online 2.0